International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-07-2026, Accepted: 11-08-2026, Published: 26-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 121-124

निर्मल वर्मा कि कहानियों में महानगरीय जीवन का तनाव

अमित[1], डॉ. कल्पना शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार, हरियाणा, भारत
[2] शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार, हरियाणा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12220

सारांश
हिंदी कथा साहित्य में निर्मल वर्मा का विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानियाँ आधुनिक महानगरीय जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों के विघटन तथा व्यक्ति के आंतरिक मानसिक द्वंद्व का अत्यंत सूक्ष्म और संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य निर्मल वर्मा की चयनित कहानियों परिन्दे, पराये शहर में, धूप का एक टुकड़ा, जलती झाड़ी तथा लंदन की एक रात के आधार पर महानगरीय जीवन और उससे उत्पन्न तनाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें मूल कहानियों के साथ आलोचनात्मक स्रोतों का भी सहारा लिया गया है। शोध से स्पष्ट होता है कि निर्मल वर्मा के कथा–संसार में महानगर केवल भौगोलिक परिवेश नहीं, बल्कि एक ऐसी मानसिक अवस्था है, जहाँ व्यक्ति भीड़ के बीच रहकर भी अकेलेपन, अजनबीपन, संवादहीनता, भावनात्मक रिक्तता तथा अस्तित्वगत संकट का अनुभव करता है। उनकी कहानियों के पात्र निरंतर आत्मसंघर्ष, पहचान के संकट और जीवन के अर्थ की खोज में दिखाई देते हैं। महानगरीय जीवन की प्रतिस्पर्धा, समयाभाव और संबंधों की औपचारिकता व्यक्ति के मानसिक तनाव को और अधिक तीव्र बना देती है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि निर्मल वर्मा ने आधुनिक शहरी जीवन की बाहरी चकाचौंध के पीछे छिपे मानवीय अकेलेपन, संबंधों के विघटन तथा मनोवैज्ञानिक तनाव को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ समकालीन समाज की जटिलताओं को समझने का महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ सिद्ध होती हैं।

मूल शब्दः निर्मल वर्मा, महानगरीय जीवन, मानसिक तनाव, अकेलापन, अजनबीपन, अस्तित्वगत संकट, हिंदी कहानी।

आधुनिक हिंदी कहानी में निर्मल वर्मा ने महानगरीय जीवन, अकेलेपन, अजनबीपन तथा अस्तित्वगत संकट को अत्यंत सूक्ष्म संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके कथा–साहित्य में आधुनिक मनुष्य का मानसिक द्वंद्व और संबंधों का विघटन प्रमुख विषय के रूप में उभरता है। विशेष रूप से महानगरीय सभ्यता ने व्यक्ति के रहन–सहन,उसकी सोचने शक्ति और संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। शहरी जीवन केवल भौतिक उन्नति संसाधन उपलब्धता तक ही सीमित नहीं रह गया है,बल्कि इसके साथ–साथ मानसिक तनाव, अकेलापन, बोरियत और संबंधों में दूरी जैसी बहुत सी समस्याएँ भी जुड़ गई हैं। हिंदी कहानीकारों, लेखको आदि ने इन परिवर्तनों का यथार्थवादी दृष्टि से अपने साहित्य में चित्रण प्रस्तुत किया है, की जिससे समाज की वास्तविक स्थिति का स्पष्ट रूप सामने आता है। इस संदर्भ में नामवर सिंह का मत है कि नई कहानी आंदोलन ने आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन, संबंधों के विघटन और बदलती सामाजिक परिस्थितियों को कथा के केंद्र में स्थापित किया। निर्मल वर्मा की कहानियाँ इसी आधुनिक संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। [1]

महानगरीय जीवन की प्रमुख विशेषता है उसकी तेज गति और व्यस्तता। यहाँ व्यक्ति निरंतर प्रतिस्पर्धा, नौकरी और समय की मार से जूझता रहता है। भौतिक सुविधाओं की अधिकता होने के बावजूद भी व्यक्ति सामाजिक और पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता के अभाव में रहता है। भीड़ भरे वातावरण के बीच भी व्यक्ति अकेलापन महसूस करता है। और व्यक्तिवाद की भावना बढ़ने के कारण लोग अपने निजी जीवन और करियर को अधिक महत्व देने लग गए हैं, जिससे पारंपरिक संबंध पर प्रभाव पड़ने के कारण वह कमजोर होते जा रहे हैं।

महानगरीय जीवन में बढ़ता हुआ तनाव एक मुख्य पहलू के रूप में सामने आया है। आर्थिक दबाव, रोजगार की अनिश्चितता, सामाजिक अपेक्षाएँ और लगातार आगे बढ़ने की होड़ व्यक्ति के मानसिक संतुलन को प्रभावित करती जा रही हैं। इस तनाव का सीधा प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार और संबंधों पर पड़ता है। परिवार के सदस्यों के बीच बोलचाल की कमी, भावनात्मक दूरी तथा आपसी समझ का अभाव इसी तनाव का परिणाम है, और यह रिश्तों के विघटन का एक प्रमुख कारण बनता जा रहा है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य निर्मल वर्मा की चयनित कहानियों के माध्यम से महानगरीय जीवन तथा उससे उत्पन्न मानसिक तनाव का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. निर्मल वर्मा की कहानियों में महानगरीय जीवन के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. महानगरीय जीवन से उत्पन्न अकेलेपन, अजनबीपन तथा मानसिक तनाव का विश्लेषण करना।
3. मानवीय संबंधों के विघटन और अस्तित्वगत संकट का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए निर्मल वर्मा की चयनित कहानियाँ परिन्दे, पराये शहर में, धूप का एक टुकड़ा, जलती झाड़ी तथा लंदन की एक रात को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया है। साथ ही संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध–पत्रों तथा संदर्भ पुस्तकों का उपयोग द्वितीयक स्रोत के रूप में किया गया है। अध्ययन में पाठ–विश्लेषण के माध्यम से महानगरीय जीवन, मानसिक तनाव, अकेलेपन, अजनबीपन तथा अस्तित्वगत संकट का विश्लेषण किया गया है।

वर्तमान समय में समाज का लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में महानगरीय जीवन का अनुभव और उससे जुड़े तनाव से जूझ रहा है। रिश्तों में बढ़ती दूरी और विघटन एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आई है। हिंदी कथा साहित्य में इन समस्याओं का गहराई से चित्रण किया

गया हैं, जिससे हमें साहित्यिक दृष्टि मिलने के साथदृसाथ सामाजिक यथार्थ को समझने में भी सहायता मिलती है। निर्मल वर्मा, जैसे लेखकों की रचनाएँ इस संदर्भ में महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इनकी कहानियों में ये सभी समस्याएं प्रमुख रूप से उभर कर सामने आई हैं। गोपाल राय के अनुसार निर्मल वर्मा ने हिंदी कहानी को बाह्य घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति के अंतर्मन, अकेलेपन तथा अस्तित्वगत संकट की ओर उन्मुख किया, जिससे उनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। [2]

परिन्दे में महानगरीय जीवन की उस त्रासदी को चित्रित करते हैं जहाँ व्यक्ति भीड़ के बीच रहकर भी गहरे अकेलेपन और मानसिक तनाव से घिरा रहता है। डॉक्टर मुकर्जी और ह्यूबर्ट के संवाद उस स्थिति के केवल विवरण मात्र नहीं हैं बल्कि व्यक्ति के अपने देश, परिवार और अपनों से दूर रहकर गहरे अकेलेपन का अनुभव और भावनात्मक रिक्तता, उदासीनता को भी उजागर करता है। उसे यह विचार भी भयभीत करता है कि यदि उसकी मृत्यु इस पराये देश में हो जाए तो उसे याद करने वाला कोई अपना नहीं होगा। डॉक्टर नियति और मृत्यु पर विचार करते हुए कहता है कि कुछ लोगों की मृत्यु एक रहस्य बन कर रह जाती है, क्योंकि वे जीवन से बहुत–सी आशाएँ लगाए रहते हैं तथा अंतिम क्षणो तक उन्हें अपनी मृत्यु का आभास मात्र भी नहीं हो पाता। मनुष्य के अकेलेपन और अस्तित्वगत की पीड़ा, परदेश में जीवन और मृत्यु की त्रासदी का अनुभव देखने को मिलता है। दूसरी ओर, ह्यूबर्ट के मन में मिस लतिका के प्रति छिपा हुआ प्रेम है, जिसे वह डॉक्टर से छिपाना चाहता है। इससे पात्रों के आंतरिक भाव, संकोच और मानसिक द्वंद्व भी सामने आते हैं। "मैं कभी–कभी सोचता हूँ, इनसान जिन्दा किसलिए रहता है–क्या उसे कोई और बेहतर काम करने को नहीं मिला? हज़ारों मील अपने मुल्क से दूर मैं यहाँ पड़ा हूँ– यहाँ कौन मुझे जानता है यहीं शायद मर भी जाऊँगा। ह्यूबर्ट, क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से परायी जमीन पर मर जाना काफ़ी खौफनाक बात है...!" [3]

यह आत्मप्रश्न महानगरीय जीवन से उत्पन्न अस्तित्वगत संकट, अकेलेपन और मानसिक तनाव का प्रतीक है। इसके माध्यम से आधुनिक मनुष्य की भावनात्मक रिक्तता तथा जीवन के अर्थ की खोज को अत्यंत प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। यह स्पष्ट करता है कि महानगर की चकाचौंध के बीच व्यक्ति भीतर से गहरे अकेलेपन और निरर्थकता–बोध से जूझता रहता है। मधुरेश का मत है कि निर्मल वर्मा के पात्र सामाजिक संघर्ष की अपेक्षा अपने भीतर के मौन, स्मृतियों और अस्तित्वगत बेचौनी से अधिक जूझते हैं। यही उनकी कहानियों की विशिष्ट पहचान है। [4]

बातों के दौरान डॉक्टर अकसर कहा करते हैं– "मरने से पहले मैं एक दफ़ा बर्मा जरूर जाऊँगा" [5] इसमें डॉक्टर का कथन जीवन की क्षणभंगुरता और मृत्यु–बोध को व्यक्त करता है। उनके स्वर में छिपी संवेदनशीलता महानगरीय जीवन में व्याप्त अकेलेपन, असुरक्षा तथा भीतर दबे मानसिक तनाव की ओर संकेत करती है। और यह भी देखने को मिलता हैं कि बाहरी सहजता के पीछे आधुनिक मनुष्य गहरे भावनात्मक द्वंद्व और अस्तित्वगत संकट से गुजर रहा होता है। अनेक आलोचकों का मत है कि निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य में अकेलापन केवल सामाजिक दूरी नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक और अस्तित्वगत स्थिति का प्रतीक है। उनके पात्र बाहरी जीवन से अधिक अपने अंतर्मन के संघर्षों से जूझते दिखाई देते हैं।

पराये शहर में महानगरीय जीवन की विडंबना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। विदेशी शहर की भीड़, अपरिचित परिवेश और क्षणिक मानवीय संबंध नायक के भीतर गहरे अकेलेपन और मानसिक तनाव को जन्म देते हैं। भीड़ में रहकर भी वह आत्मीयता की तलाश करता है, किंतु वेनिस जैसे खूबसूरत शहर में लेखक की वह आखिरी शाम उसके भीतर गहरी उदासी और एक शांत मुक्ति का अहसास कराती है। दुकानों का बंद होना, गलियों का सन्नाटा और मकानों का अँधेरा बाहरी दुनिया के खालीपन और लेखक की आंतरिक पीड़ा और अकेलेपन को दर्शाता है, शहर की भीड़ और सन्नाटे के बीच अकेलेपन को सहने के साथ–साथ वह एक अजीब तरह की शांति का अनुभव करता है। वह कहता है, "अगर तुम्हें कोई नहीं देख रहा हो, तब अकेलापन नहीं लगता" [6] कभी–कभी अजनबीपन व्यक्ति को सामाजिक अपेक्षाओं से आज़ादी देता है। लेकिन यह आज़ादी आंतरिक खालीपन या उदासी को मिटा नहीं पाती। समकालीन आलोचकों ने भी माना है कि पराये शहर में जैसी कहानियों में विस्थापन और अजनबीपन केवल भौगोलिक अनुभव नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति का प्रतीक बन जाते हैं। [7]

"मुझे खुशी हुई कि अब मैं सचमुच अकेला हूँ। मुझे इस बात की भी खुशी हुई कि उस लड़के ने उस स्त्री को भी अकेला छोड़ दिया होगा। लेकिन मैं आख़िर तक उस लड़के को खोजता रहा, जो मुझे मैडोना का पोस्टकार्ड नहीं बेच सका था। वह भीड़ में कहीं दिखाई नहीं दिया... दो सौ लीरा में वह ज़्यादा महँगा नहीं था, वह उसे कहीं भी बेच सकता है। लेकिन मैं अब उससे नहीं मिल सकूँगा, मैंने सोचा, क्योंकि वेनिस में वह मेरी आख़िरी शाम थी।" [8] वह उस लड़के का उल्लेख करता है जो उसे मैडोना का पोस्टकार्ड नहीं बेच सका, वह मानवीय संबंधों के अधूरेपन का प्रतीक है। वह लड़का और लेखक दोबारा कभी नहीं मिलेंगे। एक अजनबी सी क्षणिक मुलाकात और फिर हमेशा के लिए बिछड़ जाना, जीवन की नश्वरता और अनिश्चितता को उजागर करता है। वह अजनबी लड़का जीवन के उन अनगिनत संपर्कों का प्रतीक है जो बनते–बनते रह जाते हैं। "तुम चियान्ती को फेंक नहीं सकते, न ही उसकी पीड़ा को" [9] चियान्ती का स्वाद भले ही गर्म और कड़वा है, पर उसे फेंका नहीं जा सकता। ठीक उसी तरह जीवन का दुख और अकेलापन भी अनचाहा होते हुए भी अनिवार्य है। इंसान स्मृतियों और पीड़ा से भाग नहीं सकता, उन्हें स्वीकार करके जीना ही पड़ता है।

'धूप का एक टुकड़ा' में आधुनिक महानगरीय जीवन की उस विडंबना पर विचार किया गया है जहाँ मनुष्य दूसरों के जीवन को निकट से देखता है,पर उनके सुख–दुःख से भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाता। यह वस्तुतः महानगर की संवेदनहीन जीवन–शैली पर प्रश्नचिह्न है। कहानी में नायिका शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक अकेलेपन से भी गुजरती है। वह भीड़ और लोगों के बीच रहते हुए भी अपने भीतर एक खालीपन महसूस करती है। उसके टूटे हुए वैवाहिक संबंध और पति से अलग होने के बाद उसकी स्वतंत्रता को उजागर किया गया है लेकिन यह स्वतंत्रता उसे पूर्ण सुख नहीं दे पाती। कहानी में यह बात सामने आती है कि रिश्ते टूट जाने के बाद भी उनकी स्मृतियाँ व्यक्ति के अंतर्मन में बनी रहती हैं। 'धूप का एक टुकड़ा' जीवन में सुख,प्रेम,आत्मीयता और मानसिक शांति की तलाश का एक छोटा सा प्रतीक है। नायिका एक ऐसी जगह की खोज में रहती है जहाँ उसे अपने अकेलेपन से थोड़ी राहत मिल सके। निर्मल वर्मा इस आत्मचिंतन के माध्यम से बताते हैं कि महानगर में मानवीय संबंध औपचारिक और क्षणिक होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति भीतर से अकेलापन, रिक्तता और मानसिक तनाव का अनुभव करता है। इस संदर्भ में आधुनिक हिंदी कहानी पर किए गए अध्ययनों में यह स्वीकार किया गया है कि निर्मल वर्मा ने मौन, स्मृति और संवादहीनता को आधुनिक शहरी जीवन की केंद्रीय संवेदनाओं के रूप में चित्रित किया है। [10]

"मुझे यह सोचकर काफ़ी हैरानी होती है कि जो चीजें हमेशा एक जैसी रहती हैं, उनसे ऊबने के बजाय आदमी सबसे ज़्यादा उन्हीं

को देखना चाहता है, जैसे प्रेम में लेटे बच्चे या नव–विवाहित जोड़े की घोड़ा–गाड़ी या मुर्दों की अरथी। आपने देखा होगा, ऐसी चीज़ों के इर्द–गिर्द हमेशा भीड़ जमा हो जाती है।" [11]

"पार्क में यही एक मुश्किल है। इतने खुले में सब अपने–अपने में बन्द बैठे रहते हैं। आप किसी के पास जाकर सान्त्वना के दो शब्द भी नहीं कह सकते। आप दूसरों को देखते हैं, दूसरे आपको। शायद इससे भी कोई तसल्ली मिलती होगी।" [12] भीड़ के बीच स्वयं को पहचानने और पहचाने जाने की इच्छा आधुनिक मनुष्य की गहरी भावनात्मक आवश्यकता को व्यक्त करती है। महानगर में व्यक्ति अनेक लोगों के बीच रहकर भी आत्मीय संबंधों से वंचित रहता है, जिससे उसके भीतर अकेलापन और मानसिक तनाव जन्म लेते हैं। स्मृति और वर्तमान के द्वंद्व के माध्यम से यह दिखाते हैं कि समय बीतने के साथ व्यक्ति का बाहरी जीवन बदल जाता है, किंतु उसकी भीतरी संवेदनाएँ और पहचान की आकांक्षा बनी रहती है। समकालीन हिंदी साहित्य के अध्येताओं ने भी माना है कि निर्मल वर्मा की कहानियों में विस्थापन, अजनबीपन और आत्मनिर्वासन आधुनिक शहरी जीवन की प्रमुख विशेषताओं के रूप में उपस्थित हैं।

कहानी श्जलती झाड़ीश में महानगरीय जीवन की उस त्रासदी को रेखांकित किया गया हैं जहाँ व्यक्ति भीड़ में रहते हुए भी सामाजिक और भावनात्मक रूप से स्वयं को अलग–थलग अनुभव करता है। यह स्थिति उसके भीतर अस्तित्वगत संकट और मानसिक तनाव को और गहरा करती है "जब कभी मैं दिन–भर सोकर बाहर आता हूँ, तब अपने को एक नये सिरे से छोड़ देने की इच्छा होती है– ख़ास कर अजनबी शहरों में जहाँ हमें कोई नहीं पहचानता, और हम किसी शर्म और झिझक के बिना एक रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर हो लेते हैं।" [13] पात्र के भीतर उत्पन्न अजीब सी बेचैनी केवल व्यक्तिगत मनःस्थिति नहीं, बल्कि महानगरीय जीवन की मनोवैज्ञानिक त्रासदी का प्रतीक है। पात्र एक अजनबी शहर में है। वह ऊब,मानसिक भटकाव और अकेलेपन से जूझ रहा है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति भीड़ के बीच भी भीतर से कितना अकेला और कटा हुआ महसूस करता है। अजनबी जगहों पर व्यक्ति को अक्सर अपनी पहचान खोने और दूसरों के लिए पूरी तरह अनजाना होने का अहसास होता है। बूढ़े व्यक्ति के पास बैठकर भी लेखक यह महसूस करता है कि उसके अस्तित्व के कोई मायने नहीं हैं। बूढ़ा आदमी, जो घंटों चुपचाप मछली पकड़ने की कोशिश करता रहता है, और दो लड़के जो उससे अजीब से सवाल पूछते हैं। ये सब मानवीय संवेदनाओं के अभाव, निरर्थकता और जीवन की निरुद्देश्यता को दिखाते हैं। वह लगातार अपनी बाहरी परिस्थितियों के साथ–साथ अपने भीतर एक गहरी उदासी और खालीपन को अनुभव करता है। वह गहरे मानसिक तनाव को महसूस करता है। रात को वह हॉटल न जाकर शराबख़ानों के चक्कर काटता है। वह अपने जीवन और मृत्यु पर विचार करता है बौद्धिक स्तर पर तो वह आत्महत्या के बारे में सोच लेता है, लेकिन जीवन के प्रति उसकी उदासीनता इतनी बढ़ जाती है कि उसे लगता है कि इंसान बिना मरे भी भीतर से शून्य और मरा हुआ हो सकता है। अगले दिन वह शहर को हमेशा के लिए छोड़कर चला जाता है। लेकिन अंत में यह दिखता है कि जीवन की समस्याओं या आंतरिक अकेलेपन का कोई स्थायी समाधान नहीं मिलता, बल्कि व्यक्ति केवल एक जगह से दूसरी जगह पलायन करता रहता है। इस मनोदशा के माध्यम से आधुनिक शहरी जीवन में बढ़ती मानसिक व्याकुलता, अस्तित्वगत संकट और भावनात्मक रिक्तता को अत्यंत सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करते हैं। आलोचकों का मत है कि निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलापन केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं, बल्कि आधुनिक महानगरीय सभ्यता की उपज है, जो व्यक्ति के मानसिक तनाव को और गहरा करती है। [14]

'लंदन की एक रातश कहानी में परदेस में भटक रहे युवाओं की बेरोज़गारी और अस्तित्वहीनता, गहरे भावनात्मक अलगाव को उजागर किया गया है। अपरिचित शहर में बेघर होना और साथी होते हुए भी अपनी पीड़ा साझा न कर पाना उनके मानसिक सूनेपन को दर्शाता है। कहानी में सभी पात्र इस त्रासदी को भोगते हैं। जॉर्ज बेरोज़गारी और भुखमरी से उपजे असहाय डर और गहरे मानसिक तनाव को सहता है। विली नौकरी न मिलने पर हताश होकर बौखला जाता है और आक्रामकता व मदिरापान के माध्यम से उसकी पीड़ा को छिपाने की कोशिश करता है, जबकि नीग्रो छात्र श्घरश से दूर रहने और विदेश में स्वीकृती न मिल पाने के कारण बेगानेपन को दर्शाता है। पहचान खोने, आर्थिक तंगी और असुरक्षा का यह सामूहिक संघर्ष आखिर तक पात्रों को करीब लाने के बजाय एक–दूसरे से और अधिक अलग–थलग कर देता है। विकट परिस्थितियों में इंसान भले ही शारीरिक रूप से साथ खड़ा हो, लेकिन अपने अस्तित्व और दुख के धरातल पर वह पूरी तरह अकेला ही होता है। "किन्तु अब हम दोनों एक संग होते हुए भी अचानक अकेले पड़ गए थे। और अब हम दोनों में एक भी कुछ भी नहीं कर सकता था। शायद इससे भयंकर और कोई चीज़ नहीं, जब दो व्यक्ति एक संग होते हुए भी यह अनुभव कर लें कि उनमें से कोई भी एक–दूसरे को नहीं बचा सकता, जब यह अनुभव कर लें कि बीती घड़ियों की एक भी स्मृति, एक भी क्षण उनके मौजूदा... इस गुज़रते हुए क्षण के निकट अकेलेपन में हाथ नहीं बँटा सकता, साझा नहीं हो सकता...।" [15] सालों घर से दूर परदेस में गुज़ारने के बाद घर का ख़्याल सांत्वना देने की बजाय अजनबी और भयावह लगने लगता है। "घर?' नेग्रो छात्र, जॉर्ज के स्वर में एक सूना–सा खोखलापन उभर आया, मानो 'घर' शब्द बहुत विचित्र हो, जैसे उसने पहली बार उसे सुना हो, 'मैं चाहता था, वहीं रहूँ। लेकिन वे हमें चाहते नहीं!" [16] यह कथन महानगरीय जीवन में व्यक्ति की मानसिक अशांति, आंतरिक बेचैनी तथा अस्तित्वगत तनाव को अभिव्यक्त करता है। यहाँ तनाव बाहरी परिस्थितियों की अपेक्षा पात्र के भीतर व्याप्त अकेलेपन, असुरक्षा और आत्मसंघर्ष का परिणाम है। महानगरीय जीवन की जटिल मनःस्थितियों का अत्यंत संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उनके कथा–संसार में महानगर केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि ऐसी मानसिक अवस्था है जहाँ व्यक्ति भीड़ के बीच रहकर भी अकेलेपन, अजनबीपन, संवादहीनता और अस्तित्वगत संकट से जूझता रहता है।

लेखक ने परिन्दे, पराये शहर में और धूप का एक टुकड़ा, जलती झाड़ी तथा लंदन की एक रात जैसी कहानियों में पात्रों के अनुभव स्पष्ट किया हैं कि आधुनिक शहरी जीवन में मानवीय संबंध क्षणिक, औपचारिक और आत्मीयता से रहित हो गए हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति के भीतर मानसिक तनाव, असुरक्षा, भावनात्मक रिक्तता तथा पहचान का संकट निरंतर गहरा होता जाता है। निर्मल वर्मा बाहरी घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के अंतर्मन, आत्मसंवाद और सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक अनुभूतियों के माध्यम से इस तनाव को अभिव्यक्त करते हैं। उनके पात्र जीवन के अर्थ, संबंधों की प्रामाणिकता और अपने अस्तित्व की सार्थकता की निरंतर खोज में दिखाई देते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों में महानगरीय जीवन की चमक–दमक के पीछे छिपी संवेदनहीनता, अकेलापन और मानसिक विखंडन अत्यंत प्रभावशाली रूप में उभरकर सामने आता है। आधुनिक महानगरीय जीवन पर किए गए समकालीन अध्ययनों से भी यह स्पष्ट होता है कि शहरी जीवन की तीव्र गति, सामाजिक अलगाव और प्रतिस्पर्धा व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य तथा संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इस प्रकार निर्मल वर्मा की कहानियाँ आधुनिक महानगरीय जीवन की त्रासदी, लघु जीवनानुभवों, अस्थायी संबंधों तथा व्यक्ति के आंतरिक तनाव का सशक्त साहित्यिक दस्तावेज़ सिद्ध होती हैं।

अंततः कहा जा सकता है महानगरीय जीवन का तनाव और विघटन बहुआयामी है, जिसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी पहलू शामिल हैं। परिन्दे, पराये शहर में, धूप का एक टुकड़ा, जलती झाड़ी तथा लंदन की एक रात के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महानगर केवल भौतिक विकास और आधुनिक जीवन–शैली का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के भीतर उत्पन्न अकेलेपन, अजनबीपन, संवादहीनता, अस्तित्वगत संकट तथा मानसिक तनाव की जटिल अनुभूतियों का भी प्रतिनिधित्व करता है। निर्मल वर्मा ने अपने पात्रों के अंतर्मन, स्मृतियों, मौन तथा आत्मसंवाद के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की विखंडित चेतना और संबंधों के बदलते स्वरूप को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। नामवर सिंह, गोपाल राय तथा मधुरेश के आलोचनात्मक मत भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि निर्मल वर्मा की कहानियाँ नई कहानी की आधुनिक संवेदना, आत्मपरक चेतना और मानवीय अस्तित्व के संकट की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। समकालीन शोध भी यह स्वीकार करते हैं कि उनके कथा–साहित्य में महानगरीय जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक विडंबनाओं का यथार्थपरक निरूपण हुआ है। इस प्रकार निर्मल वर्मा का कथा–साहित्य आधुनिक शहरी जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों के विघटन तथा मानसिक तनाव के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक साहित्यिक आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. सिंह, न. (2005). कहानी: नई कहानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ संख्या 114.
2. राय, गो. (2008). हिंदी कहानी का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ संख्या 157.
3. वर्मा, निर्मल. (2024). परिन्दे तथा अन्य कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ संख्या 146.
4. मधुरेश. (2009). हिंदी कहानी: अस्मिता की तलाश. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 68.
5. वर्मा, निर्मल. (2024). परिन्दे तथा अन्य कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 146.
6. वर्मा, निर्मल. (2024). पराये शहर में. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 147.
7. सोनी, क., एवं तिवारी, प. (2026). आधुनिकता और मानव–चेतना : निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन. नवीन शोध संसार. पृष्ठ संख्या 116.
8. वर्मा, निर्मल. (2024). पराये शहर में. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 148.
9. वर्मा, निर्मल. (2024). पराये शहर में. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 148.
10. समकालीन हिंदी साहित्य: संवेदना, संरचना और रचनात्मकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन. (2026). IJFMR.
11. वर्मा, निर्मल. (2024). धूप का एक टुकड़ा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 58.
12. वर्मा, निर्मल. (2024). धूप का एक टुकड़ा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 59.
13. वर्मा, निर्मल. (2024). जलती झाड़ी. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 85.